रात्रिक्लास 28/5/68 ओमशान्ति

आत्माओं को पूरा ज्ञान मिलता है तो आत्मा समझ जाती है कि हम पीसफुल हैं। यहां शरीर मिलने से सायलेंस से टॉकी बन जाते हैं। सायलेंस ड्रामा कब होता नहीं। मूवी और टॉकी होता है। बच्चों को समझाया जाता है आवाज़ जास्ती न करो। आवाज़ से परे जाना है। श्रीनाथ द्वारे आदि में जब भोजन बनाते हैं तो आवाज़ नहीं होती है। वहां सभी घी के माल बनते हैं। जगर(न्)नाथ में फिर सिर्फ़ चावल। इतना फ़र्क क्यों है? वह हल्का खाना। यहां भी बच्चों को समझाया जाता है हल्का भोजन, न बहुत ऊँच न बहुत नीच। सतयुग में तो घी की नदियां बहती हैं। बच्चे जो नहीं जानते थे सो अभी जानते रहते हैं। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो अभी तुम जानते हो। दिन–प्रतिदिन आते नये आते जावेंगे। पहले मूँझेंगे फिर आस्ते–2 अच्छे हो जावेंगे। समझते जावेंगे। कई बच्चे फारकती डायवोर्स देते हैं। बाप ऐसे मुख से खुद नहीं कहेंगे निकल जाओ। समझावेंगे अच्छे होकर चलो। विवेक कहते हैं राजधानी स्थापन होती है। उसमें कम पद वाले भी होंगे। वह ज़रूर पढ़ाने वाले से न पढ़ते हैं तब ही कम पद पाते हैं। अच्छा पढ़ेंगे तो अच्छा पद मिलेगा। यह है समझ। इसको बेहद की बुद्धि कहा जाता है। अभी तुम कितने विशाल बुद्धि बने हो। आगे मन्दिर आदि में माथा ट(टे)कते थे। कोई के ऑक्युपेशन को नहीं जानते थे। दुनियां में कोई भी नहीं जानते हैं। बाप ने समझाया है शास्त्रों के ज्ञान को कोई ज्ञान नहीं कहा जाता है। बाप खुद ही ज्ञान का सागर है। वह है ही भक्तिमार्ग। आगे ऐसे नहीं कहते थे ईश्वर सर्वव्यापी है। भित्तर–ठिक्कर है। अभी बुद्धि तमोप्रधान बन गई है। सतयुग में देवी–देवताएं पारस बुद्धि थे। बाबा ने समझाया था कहते हैं सर्प में मणी होती है। फिर उस पर बहुत कमाते हैं; परन्तु ऐसे है नहीं। अभी तुम्हारे मस्तक में मणी है। बड़ी ही वैल्युएबुल है। एक–2 ज्ञान वरशंस लाखों रुपये की है। भक्त लोग शास्त्रों के ज्ञान को लाखों मिल्कियत की समझते हैं; परन्तु यह है भक्ति। तुम ही सतयुग के मालिक थे। अभी फिर तुम बन रहे हो। शास्त्रों में लड़ाई आदि कितना दिखाया है। शास्त्रों को नहीं मानते हैं ना। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है। तुमसे पूछते हैं शास्त्रों को मानते हो? बोलो हाँ, क्यों नहीं मानते हैं? शास्त्र तो हैं ; परन्तु भक्तिमार्ग की है। उनसे मुक्ति नहीं मिल सकती है। ज्ञान से मुक्ति होती है। शास्त्र है भक्ति की। वह है शास्त्रों की अथॉरिटी। कितने नाम रख देते हैं। श्री–2 108 जगदगुरू। जगदगुरू में तो शक्ति चाहिए जो सभी को पावन बनावे। वह तो एक ही बाप बनाते हैं। इसमें आपोज़िशन भी बहुत होते हैं। खेवैया के बोट को हिलाते बहुत हैं। तुम सच्ची–2 नैया हो। भक्तिमार्ग में अपन को नैया समझ पुकारते हो। बाबा, नैया मेरी पार लगाओ। अर्थ नहीं समझते। गाते हैं नैया मेरी पार लगाओ। अभी बच्चे समझ गये हैं बेड़ा डूबता भी है, पार भी होता है। बाप कहते हैं मैं पार करता हूँ। फिर डुबोते कौन हैं? सिद्ध कर बताते हैं। अर्जुन को भी कहा है ना। तुमको सुप्रीम गुरू मिला तो फिर वह गुरू आदि करने की क्या दरकार है? तुम बाप और रचना के आदि, मध्य, अंत को जान गये हो। वह सत–चित आनन्द स्वरूप है। आत्मा चैतन्य है। बाप आनंद का सागर, सुख का सागर है। फिर बच्चों को वर्सा देते हैं। फिर कम–जास्ती बच्चों का पुरुषार्थ होता है। रचयिता बाप नई सृष्टि रचते हैं। बाप पुरानी तो नहीं रचेंगे ना। नई को पुरानी होना है। फिर पुरानी सो गई बाप बनाते हैं। बाप आकर पूरा समझाते हैं। अभी बाप बच्चों पर, बच्चे बाप पर कुर्बान जाते हैं। बाप कह देते हैं यह छी–2 दुनियां है। इनको छोड़ दो। ड्रामा में पार्ट है। ज़रूर। ड्रामा प्लेन अनुसार सतयुग आना है। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। सतयुग से त्रेता में आते हैं। उनको पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। सीढ़ी उतरते हो ना। सतयुग में सूर्यवंशी, त्रेता में चन्द्रवंशी। यह तुम बच्चों के सिवाय और कोई समझ न सके। बाप समझाते हैं यह डिनायस्टी है। ल.ना. फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। यह ड्रामा है। इनको बाप ही जानते हैं। भक्ति(मार्ग) में ऐसे होता है। मूँझने की बात नहीं। बीती को चितवो नहीं। बीत गया उनको जाकर दूसरा पार्ट बजा(ना) था। हरेक को अपना पार्ट बजाना है। रोने की दरकार ही नहीं। समय भी ऐसा होता जाता है। समय .....

बाप भी ऐसे ही समझाते हैं। सतयुग में सुख ही सुख है। अभी है संगमयुग। कोई से छुट्टी भी न ले सकेंगे। पीनी आदि कुछ भी कर न सकेंगे। बुद्धि भी ऐसी कहती है हम बाप के बच्चे पार्टधारी हैं। पिछाड़ी में विनाश ज़रूर होना है। कितने अच्छे–2 सामान बनाते रहते हैं जो कुछ भी तकलीफ न हो। बहुत सुखाला मौत हो जाता। हॉस्पिटल आदि की दरकार ही नहीं। 21 जन्म सर्जन होता नहीं। न बैरिस्टर ,न जज। धर्मराज होगा ही नहीं। बच्चों को खुशी भी देते हैं, धैर्य भी देते हैं। साहूकारों के लिए तो यहां ही स्वर्ग है। यहां राजाई के हकदार ग़रीब ही बनते हैं। साहूकारों को धन–दौलत, बाल–बच्चों से ही ममत्व निकाल न सके। महल, एरोप्लेन, बच्चे आदि याद आते रहेंगे। वहां की तो चीज़ ही और होगी। साइंस दान भी क्या करते हैं? एक हार्ट निकाल दूसरी डालते हैं। फिर भी हिम्मत तो करते हैं ना। 5–6 मास चल पड़ता है; क्योंकि आर्टीफिशियल चीज़ें हैं ना। भारत सच्च खण्ड था पुराना को झूठ खण्ड कहा जाता है। वहां तो सभी कुछ नया ही होता है। यहां तो झूठ बिगर चल न सके। कोई–2 बहुत थोड़े हैं तो सच्च पर ही चलते हैं। बच्चों के लिए भी गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। बाप ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर है ना। कहते हैं बच्चों, अभी मैं आया हूँ। अभी तुमको पवित्र बनना पड़े। तुम आये हो यह (ल.ना.) बनने के लिए। तुमसे कोई छीन न सके। बना बनाया ड्रामा है। ईश्वर की कृपा की बात ही नहीं। उनको आना ही है बच्चों को पढ़ाने। कल्प–2 पढ़ाते हैं। पावन बनाना भी पढ़ाई का एक अंग है। अभी तुम सभी एक्टर्स हो। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह एक ही खेल है। सांवरा से गोरा बनते हैं। कल्प का संगमयुग है यह। इस पढ़ाई से कितना सुख मिलता है। तो पूरा अटेन्शन देना है। रहना भी अपने घर मे है। कृष्ण को याद करने से पाप कटेंगे नहीं। कितना नुकसान हो जाता है। वह सभी है भक्तिमार्ग। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।